श्रीराम चिन्तन

श्रीराम चिन्तन

प्रकाशक : **निरंजन बुक् ट्रष्ट**
चतुर्थ मुद्रण : १५ अगष्ट २०१२
मुद्रण एवं अलंकरण : **दिव्य मुद्रणी,**
भुवनेश्वर – २ (उड़िसा)
मूल्य : **रु** 10/-

श्रीराम चिन्तन

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

सगुण निर्गुण दोउ रूप है राम ।
सगुण मिथ्या निर्गुण सत्य है राम ।।

व्यक्ति प्रतिक साकार है राम ।
शक्ति प्रतिक निराकार है राम ।।

व्यक्ति रूप नहीं है वह राम ।
शक्ति स्वरूप तुम जानो राम ।।

अनुभव रूप तुम जानो राम ।
नेत्रों से नहीं दिखते है राम।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

दशरथ पुत्र एक थे राम ।
घट घट में बैठे एक राम ।।

घट घट में बैठे जो राम ।
उसी को जानो अनादि राम ।।

व्यक्ति रूप नहीं जानो राम ।
शक्ति स्वरूप है वह राम ।।

नर रूप नहीं जानो राम ।
नारायण रूप है वह राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मै हूँ राम ।।

नाम रूप से न्यारे हैं राम ।
व्यापक ब्रह्म अलख है राम ।।

नेत्रों से नहीँ दिखते राम ।
सब नेत्रो से देखत राम ।।

मन बुद्धि नहीँ जानत राम ।
मन बुद्धि को जानत राम ।।
ध्यान समाधि नहीँ है राम ।
ध्यान समाधि के साक्षी है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

साधन से नहीँ सिद्ध है राम ।
सब साधन के आश्रय राम ।।
नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त है राम ।
अजर अमर है सब में राम ।।
शस्त्रों से नहीँ कटते राम ।
अग्नि से नहीँ जलते राम ।।
पानी से नहीँ गलते राम ।
पवन से नहीँ सूखते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

जन्म मरण नहीँ कोउ राम ।
मृत्यु को भी मारत राम ।।

भूख प्यास नहीँ लगति राम ।
चारों अन्न पचाते राम ।।

दुःख सुख तो नहीँ छूते राम ।
सुख दुःखोंके साक्षी है राम ।।
चौराशी नहीँ फिरते है राम ।
अचल असंग रहते है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

सबके परम प्रकाशक राम ।
ऐसा वेद बताते राम ।।

पुरुषों में है उत्तम राम ।
दूर पास नहीं है वह राम ।।
मैं हूँ रूप में रमते है राम ।
असंग पुरुष कहाते राम ।।
युग युग नहीं अवतरते राम ।
चारों युग के प्रकाशक राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

पुण्य पाप नहीं छूते राम ।
स्वर्ग नर्क नहीं जाते राम ।।
सर्व जगत में रहते राम ।
सब जीवों के प्राण है राम ।।
श्वाँस श्वाँस के साक्षी है राम ।
दृश्य जगत के द्रष्टा है राम ।।

अखण्ड असंग है आत्मा राम ।
अलख अनादि अनुपम राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

द्रष्टा साक्षी है आत्मा राम ।
सत् चित् आनन्द अद्वय राम ।।

जगत आत्म प्राणपति राम ।
सहज सुलभ है सबको राम ।।

अन्य रूप नहीं जानो राम ।
निजात्म स्वरूप में है वह राम ।।

नाम रूप सब माया राम ।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

नित्यों के भी नित्य है राम ।
चेतन के भी चेतन राम ।।

एक अखण्ड ज्ञान है राम ।
माया को छाया जानो राम ।।

ध्यानी खोजत ध्यान में राम ।
सोई मैं सच्चिदानन्द है राम ।।

सन्मुख होते जब कोउ राम ।
जन्म मरण हर लेते हैं राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

पापी को नहीं दिखते राम ।
निगुरों को नहीं मिलते राम ।।

व्यापक ब्रह्म अलख है राम ।
इन्द्रिय गोचर नहीं है राम ।।

द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।
सोऽहं सोऽहं सोऽहं राम ।।

सत् चित् आनन्द आत्मा राम ।
असत् अचित् दुःख नहीं है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

दृश्य रूप नहीं है वह राम ।
द्रष्टा रूप में रहते हैं राम ।।

तीन शरीर से न्यारे है राम ।
तीन अवस्था से पार है राम ।।

पंच कोश के साक्षी है राम ।
तीन गुणोंके प्रकाशक राम ।।

क्षर अक्षर से पार है राम ।
जीव ईश से न्यारे है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

सर्व लोक के स्वामी राम ।
शुद्ध ब्रह्म परात्पर राम ।।

गुरु शरण तुम जाओ राम ।
विमुखन को नहीं दिखते राम ।।

ज्योतियों के भी ज्योति है राम ।
सब के परम प्रकाशक राम ।।

सब देवों के देव हैं राम ।
शेष सभी है अनातम राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

कान बिना सब सुनते राम ।
आंख बिना सब देखते राम ।।

हाथ बिना सब करते राम ।
पाँव बिना चलते हैं राम ।।

मुख बिना सब खाते राम ।
जीभ बिना सब बोलत राम ।।

नाक बिना सब सूंघत राम ।
बिना लिंग के है वह राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

आखों के भी आंख है राम ।
कानों के भी कान है राम ।।

प्राणों के भी प्राण है राम ।
मनके मनता है वह राम ।।

बुद्धि के भी ज्ञाता है राम ।
जीवों के भी जीव है राम ।।

सब कर्मों में अकर्म है राम ।
असंग पुरुष कहावत राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

पापी को नहीं मारत राम ।
धर्मी को नहीं तारत राम ।।

एक देश में नहीं वह राम ।
सब देशों में रहते हैं राम ।।

एक काल में नहीं है राम ।
सब कालों में रहते हैं राम ।।

एक रूप में नहीं है राम ।
सब रूपों में रमते है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

यहाँ नहीँ वह खण्डित राम ।
अभी नहीँ वह अनित्य है राम ।।

मुझसे भीन्न नहीं व्यापक राम ।
इधर उधर नहीँ ढुण्डो राम ।।

मैं रूप अब जानो राम ।
यहाँ रहेगा वह अखण्ड है राम ।।

अभी जो होगा नित्य है राम ।
सब रूपों में रहता है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

व्यापक ब्रह्म अलख है राम ।
सत् चेतन घन आनन्द राम ।।

गुरु कृपा यह जाना राम ।
मैं रूप हि है वह राम ।।

सजातीय बन्धु नहीं कोउ राम ।
विजातीय शत्रु नहीं कोउ राम ।।
स्वगत भेद भी नहीं कोउ राम ।
इसीसे कहते असंग है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

आत्मा का नहीं जन्म है राम ।
क्योंकि आत्मा अजन्मा राम ।।
नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त है राम ।
वही मैं सच्चिदानन्द हूँ राम ।।
साधन से नहीं सिद्ध है राम ।
स्वयं सिद्ध निरंजन राम ।।
सोऽहं सोऽहं सोऽहं राम ।
सोऽहं सोऽहं हम है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

ऊंच नीच नहीँ देखत राम ।
जाति भेद नहीँ मानत राम ।।

मित्र शत्रु नहीँ कोउ राम ।
राग द्वैष नहीं करते हैं राम ।।

सब जीवों के प्राण है राम ।
अन्य रूप नहीं जानो राम ।।

सर्वत्र व्यापक है वह राम ।
सूर्य समान प्रकाशक राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

भेद भक्ति से नहीँ मिलते राम ।
चित शुद्धिका साधन राम ।।

ज्ञान मार्ग से मिलते हैं राम ।
ऐसा वेद बताते राम ।।

श्रद्धावान ही पाते है राम ।
श्रवण मनन से जानो राम ।।

सुनकर तत्त्वमसि तुम राम ।
मैं ब्रह्म हूँ जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

दुष्टों को नहीं मारत राम ।
सब प्राणी को धारत राम ।।

गुरु कृपा हम जाना राम ।
सोऽहं सोऽहं आत्मा राम ।।

मायाधीश ज्ञान है राम ।
मायाधीन जीव है राम ।।

जीव अनेक एक है राम ।
दृश्य अनेक के द्रष्टा एक राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

मुझे में राम तुझमें राम ।
हम तुम दोनों एकहि राम ।।

सब रूपों में समाया राम ।
नाम रूप सब माया राम ।।

जड़ चेतन सबमें एक राम ।
राम बिना नहीं कछु है राम ।।

अगुण सगुण दोउ रुप है राम ।
अचल असंग रहते हैं राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

जो कोई सुमिरत सोऽहं राम ।
निज स्वरूप है आतम राम ।।

जग दृश्य के द्रष्टा है राम ।
मन बुद्धि के पार है राम ।।

सकल देव नहीं जानत राम ।
सब देवों के देव है राम ।।

अलख निरंजन व्यापक राम ।
जगत चराचर स्वामी राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

मायापति को जानो राम ।
ज्ञान अखण्ड सीयावर राम ।।

अगुण असंग अरूप है राम ।
सो मैं सच्चिदानन्द हूँ राम ।।

ब्रह्म अनामक अजन्मा राम ।
अनादि व्यापक अनन्त है राम ।।
सर्व हृदय में रहते राम ।
सर्व रूप में रमते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

षट् विकार नहीँ है राम ।
षट् उर्मि के द्रष्टा है राम ।।
परवश जीव स्ववश है राम ।
जीव अनेक एक है राम ।।
व्यापक व्याप्त अखण्ड है राम ।
जड़ चेतन आधार है राम ।।
ब्रह्म अखण्ड अनन्त है राम ।
अनुभवी सन्त भजई सोई राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

जगत प्रकाश्य प्रकाशक राम ।
सब पर परम प्रकाशक राम ।।

चिन्मय ब्रह्म अविनाशी राम ।
मायाधीश ज्ञान है राम ।।

अगुण अखण्ड अनन्त है राम ।
सर्व रहित उर पुरबासी राम ।।

निजानन्द निरुपाधिक राम ।
सच्चिदानन्द ब्रह्म है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

आनन्द सिन्धु ज्ञानघन राम ।
सहजानन्द स्वरूप है राम ।।

सर्वत्र व्यापक सम है राम ।
भव भय भन्जक आतम राम ।।

सब दृष्टि के द्रष्टा है राम ।
व्यापक ब्रह्म निरंजन राम ।।

सत्यं ज्ञानं अनन्त राम ।
निज को जानो आत्मा राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

आकाश में अवकाश है राम ।
पवन में प्राण है वह राम ।।

सूर्य में तेज है वह राम ।
जल में जीवन है वह राम ।।

पृथ्वि में धारण शक्ति है राम ।
आदि मध्य अन्त है राम ।।

उत्पत्ति स्थिति प्रलय भी राम ।
ऐसा श्रुति वताती है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

व्यापक अखण्ड है सत्ता राम ।
अणु अणु में है वह राम ।।

हृदय सर्वस्य स्थित है राम ।
वेदान्त वैद्य बताते है राम ।।

जीव अंश अंशी है राम ।
अंशी से अंश पृथक् नहीं राम ।।

निज को आतम जानत राम ।
तत्काल मुक्त हो जाता राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

जगत् प्रकाश प्रकाशक राम ।
सोई मैं अलख पुरुष हूँ राम ।।
अकथ अनामय अनिह राम ।
व्यापक विश्व रूप है राम ।।
श्रद्धा भक्ति स्वरूप है राम ।
जिसके बिना नहीं मिलते राम ।।
गो गोचर नहीं है वह राम ।
इन्द्रिय अगोचर जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।

भव भय भन्जक जानो राम ।
मुक्ति दाता ज्ञान है राम ।।
जड़ चेतन जग रूप है राम ।
अगुण सगुण दोउ रूप हे राम ।।

व्यापक विश्व रूप है राम ।
शुद्ध शान्त सहज है राम ।।
चिदानन्द निर्गुण है राम ।
सच्चिदानन्द मैं आत्मा राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

सदा नहीं जो भजते राम ।
कैसे दुःख मिटे बिन राम ।।
कण कण व्यापक है श्रीराम ।
घट घट वासी आत्मा राम ।।
अणु अणु में बैठा है राम ।
हिलता नहीं पत्ता बिनु राम ।।
जड़ चेतन सब जानो राम ।
जीव चराचर स्वामी राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

पत्र पुष्प में देखो राम ।
पशु पक्षी में है वह राम ।।

चारों अन्न पचाते राम ।
भोक्ता जीव के साक्षी है राम ।।

देह विचार से बन्धन राम ।
आत्म विचार से मुक्ति है राम ।।

विचारन मोक्षो भवति राम ।
तस्मात् सदा विचारो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

सर्व रुप में रहते राम ।
सकल जगत से न्यारे राम ।।

काहू को नहीं मारत राम ।
सब जीवों को धारत राम ।।

जगत आत्म प्राणप्रिय राम ।
आत्म विमुख नहीं पावे राम ।।

अज्ञानी को दूरस्थ है राम ।
ज्ञानी स्वयं को जानत राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

गुफामें प्रकाश जब करते राम ।
युग युग का तम नाशत राम ।।

आत्म सम्मुख जब होवे राम ।
जन्म कोटि अघ नाशत राम ।।

अनिह अरूप अलख है राम ।
अलक्षण अचिन्त्य है वह राम ।।

अवध नरेश नहीं वह राम ।
अखण्ड अनन्त अनादि राम ।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

शंकर जपत निरन्तर राम ।
सोऽहं सोऽहं भजते राम ।।

परमानन्द सत्घन है राम ।
चिन्मय अविनाशी ब्रह्म राम ।।

देश विदेश कहाँ नहीं राम ।
सर्वत्र व्यापक आत्मा राम ।।

चिदानन्द निर्गुण है राम ।
व्यापक ब्रह्म अलख है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

प्राणों से भी प्रिय है राम ।
सब जीवों के प्रियतम राम ।।

जीव चराचर आश्रय राम ।
सब प्राणी के जीवन राम ।।

परमारथ स्वरूप है राम ।
व्यापक ब्रह्म पुरुष है राम ।।

नित्य निरंजन आतम राम ।
सोई मैं सच्चिदानन्द हूँ राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवति राम ।
ऐसा वेद वताते राम ।।
जिन्हें जनावत निज रुप राम ।
जानत वह हो जाता राम ।।

व्यापक ब्रह्म भुवनेश्वर राम ।
व्यापक व्याप्य अखण्ड है राम ।।

अविगत अनुपम अलख है राम ।
कृपा निधान अन्तर्यामी राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

सूर्य चन्द्र नहीं प्रकाशत राम ।
विद्युत तारे कैसे प्रकाशे राम ।।

प्राण अपान नहीं जानत राम ।
प्राण अपान के साक्षी है राम ।।

जाग्रत स्वप्न है मिथ्या राम ।
तीन अवस्था के साक्षी है राम ।।
सत्यं शिवं सुन्दरं राम ।
सत् चेतन घन आनन्द राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

अर्णु अणियान है वह राम ।
महतो महियान है वह राम ।।

दूर पास नहीं है वह राम ।
स्वयं रूप है आतम राम ।।

अस्ति भाति प्रिय है वह राम ।
नाम रूप है माया राम ।।

जगन्नाथ ही आत्मा राम ।
धाम पुरी नहीं भागो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

जाति भेद नहीं है राम ।
ऊंच नीच में सम है राम ।।

साकार मूर्त्ति नहीं है राम ।
निराकार निर्गुण है राम ।।
जड़ देह में चेतन राम ।
वही मैं चेतन आतम राम ।।
सर्व उपाधि से मुक्त है राम ।
सत्ता मात्र अगोचर राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

देह मन्दिर में खोजो राम ।
तीर्थ मन्दिर नहीं ढूंढो राम ।।
अज अद्वैत हृदयेश है राम ।
अकाल अनिह अरूप है राम ।।
जीवों के अन्तर्यामी राम ।
मन बुद्धि के है साक्षी राम ।।

भिन्न रूप जो मानत राम ।
ब्रह्म हत्यारा उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

सब धर्म को त्याग के राम ।
आत्म शरण तुम आओ राम ।।

कितना भी पापी क्यों नहीं राम ।
सब पापों को नाशत राम ।।

ज्ञान नौका पर आरूढ़ राम ।
अविलम्ब भव पार करते राम ।।

चिन्ता रहित जाओ शरण में राम ।
जीवन मुक्ति तत्काल पाओ राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

जिन चित्रोंको मानत राम ।
चित्रकार के है कल्पित राम ।।

जिस मूरत को कहते हो राम ।
शिल्पी गढ़ा है मन से राम ।।

टुटे कटे जले नहीँ वह राम ।
अखण्ड को तुम जानो राम ।।

वेद पार नहीं पावे राम ।
नेति नेति बतावे राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

शिल्पी गढ़ नहीं सकता राम ।
स्वयंभू है वह आतम राम ।।

व्यापक एक अविनाशि राम ।
सत् चेतन घन आनन्द राम ।।

सहज प्रकाश रुप है राम ।
ज्ञान प्रकाश को जानो राम ।।

चिन्मय अविनाशी है वह राम ।
मन बुद्धि के द्रष्टा है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

अखण्ड अनन्त अनादि राम ।
अकथ अलख अगुण है राम ।।

देश विदेश सब रुप है राम ।
जड़ चेतन सब एक है राम ।।

व्यापक ब्रह्म है आत्मा राम ।
चिदानन्द निर्गुण है राम ।।
व्यापक ब्रह्म अलख है राम ।
जीव चराचर प्राण है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

सकल विकार रहित है राम ।
निर्विकार को जानो राम ।।

भव भय भन्जन है वह राम ।
शोक मोह नहीं छूवत राम ।।

आत्म स्वरूप को जानो राम ।
जड़ मूर्ति नहीं है वह राम ।।
श्वाँस श्वाँस में जानो राम ।
कभी नहिं भूलो आतम राम ।।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

मंगलमय पावनपुरि है राम ।
भगत हेतु सुखधाम है राम ।।

तरक न सके अनुमानी राम ।
नेति नेति वेद बताते राम ।।
मंगल मूल ज्ञान है राम ।
अविगत अलख अनादि राम ।।
परमानन्द पुरुषोत्तम राम ।
अनादि अवध कहावत राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

सोपाधिक रूप से चलते है राम ।
निरुपाधिक रूप से अचल है राम ।।
सब भूतों में एक है राम ।
चराचर में जानो एक राम ।।
जिनकी एकत्व दृष्टि है राम ।
शोक मोह में नहीं होता है राम ।।

अज्ञानी को दूरस्थ है राम ।
ज्ञानी स्वरूप है वह राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

ब्रह्म जिज्ञासा नहीं जिन्हें राम ।
निष्काम कर्म करे वे राम ।।

ब्रह्म जिज्ञासा जब हो गई राम ।
श्रवण करो गुरु द्वारे राम ।।

मैं ब्रह्म में जिन्हें संशय राम ।
मनन उन्हीं को करना राम ।।

आत्म निष्ठा जिन्हें नहीं दृढ़ राम ।
निदिध्यासन नित्य करे राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

आत्म निष्ठा को नहीं साधन राम ।
सर्वव्यापि जब जाना राम ।।

तीर्थ मन्दिर नहीं प्रयोजन राम ।
जो जाता वह मूरख है राम ।।

शिशु खेल है पूजा राम ।
लोक दिखावा माला राम ।।

गुडियन खेल अब छोड़ो राम ।
आत्म प्रीतम से मिलो अब राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

ज्ञाना मृत से तृप्त जो राम ।
धन्य धन्य उन्हें जानो राम ।।

मात पिता वे धन्य है राम ।
गर्भ से जिनके जन्मे राम ।।

नित्य मुक्त उन्हें जानो राम ।
मैं साक्षी जो जानत राम ।।
किञ्चित कर्तव्य उन्हें नहीं राम ।
जो मानत वह अज्ञ है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मै हूँ राम ।।

माला में नहीं मिलते राम ।
माला करने से पहले राम ।।
पूजा में नहीं मिलते राम ।
पूजा करने से पहले राम ।।
तीरथ में नहीं खोजो राम ।
तीर्थ करने से पहले राम ।।
मूर्ति में नहीं मिलते राम ।
मूर्ति द्रष्टा तुम हो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

गंगा स्नान में नहीँ है राम ।
ज्ञान स्नान से मिलते राम ।।

अज्ञानी को दुर्लभ है राम ।
ज्ञानी स्वयं परमब्रह्म है राम ।।

जीव वली न चढ़ाओ राम ।
जड़ मूरत में नहीँ है राम ।।

पुष्पों को नहीँ तोड़ो राम ।
रंग सुगंध रूप है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

मानव कृत मन्दिर नहीं राम ।
देह मन्दिर में रमते हैं राम ।।

काष्ठ मूर्ति नहीं है राम ।
अग्नि से जलती वह राम ।।

मिट्टी मूर्ति नहीं है राम ।
पानी से गलती वह राम ।।

धातु मूर्ति नहीं है राम ।
चोर उसे चुराते हैं राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

जल बर्फ नहीं अन्तर राम ।
निराकार ही साकार राम ।।

सूर्य चन्द्र जल पवन है राम ।
वृक्ष लता फूल फल है राम ।।
पशु पक्षी जड़ चेतन राम ।
सर्व एक ब्रह्म रूप है राम ।।

मूर्ति को मानत जो कोई राम ।
महा मूर्ख उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

सूर्य चन्द्र नहीं प्रकाशते राम ।
मन बुद्धि के प्रकाशक राम ।।

जहाँ जहाँ मन जाता राम ।
प्रथम वहाँ ब्रह्म रहता राम ।।

बिन शक्ति सब शब है राम ।
फुरना नहीं होती बिन राम ।।

जग दृश्य के द्रष्टा है राम ।
सब जीवों के प्राण है राम ।।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

ब्रह्मा विष्णु शिव हैं राम ।
गुरु साक्षात् परमब्रह्म है राम ।।
गुरु देवों में महान है राम ।
गुरु से बड़ा नहीं कोउ राम ।।
ब्रह्मवित ब्रह्म समान है राम ।
गुरु बिन मुक्ति नहीं है राम ।।
गुरु मानुष सम जानत राम ।
अन्ध पुरुष उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

जो यहाँ वही वहाँ है राम ।
यहाँ नहीं वह नहीं है राम ।।
जो अभी नहीं वह नहीं है राम ।
सर्वदा रहे वह नित्य है राम ।।

जो मैं रूप नहीं वह नहीं राम ।
सर्व रूप में रहते है राम ।।

सोच विचार करो नहीं राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

आहार शुद्ध मन शुद्ध है राम ।
निर्मल मन सुमिरत हैं राम ।।

आहार अशुद्ध जो करते हैं राम ।
कुत्ता बिल्ली तन पावत राम ।।

मन शुद्धि से ज्ञान है राम ।
ज्ञान मोक्ष प्रद जानो राम ।।
ज्ञानी भक्तों में श्रेष्ठ है राम ।
ज्ञानी को आतम जानत राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

आत्म तीर्थ नहीं जानत राम ।
बाह्य तीर्थों में भटकते राम ।

हीरा त्याग कांच पकड़ते राम ।
मूर्खों में शिरोमणी वह राम ।।

ज्ञानामृत से जो कृत कृत्य राम ।
कुछ नहीं करना उसको राम ।।

ज्ञानामृत से तृप्त जो राम ।
धन्य धन्य उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

अहं ब्रह्म अपरोक्ष है राम ।
अस्ति ब्रह्म परोक्ष है राम ।।

मैं ब्रह्म नहीं जानत राम ।
वह मुक्त नहीं होवत राम ।।
देह क्षर जीव अक्षर राम ।
दोनों परा प्रकृति है राम ।।
क्षर अक्षर से परे हैं राम ।
पुरुषोत्तम उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

ज्ञानी चरणामृत जो पिते राम ।
चित्त शुद्धि का साधन राम ।।
देहभाव जब गल गया राम ।
सर्वत्र दिखते उसको राम ।।
जहाँ द्वैत वह माया राम ।
अद्वैत ब्रह्म एक है राम ।।

असंग अलख एक है राम ।
ऐसा वेद बताते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

नभ में भेद अज्ञान से राम ।
घट मठ में नभ एक है राम ।।

जीव ईश उपाधि कृत है राम ।
उपाधि त्यागे अखण्ड है राम ।।

अनादि अनन्त तुम जानो राम ।
आदि अन्त यह जगत् है राम ।।

सदा रहे वह तुम हो राम ।
देह को मैं नहीं जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

जन्म मरण नहीं मुझमें राम ।
अजर अमर मुझे जानो राम ।
भूख–प्यास नहीं मुझमें राम ।
भूख प्यास प्राण के हैं राम ।।
सुख–दुःख नहीं मुझमें राम ।
सुखी दुःखी मन कृत है राम ।।
कर्ता–भोक्ता नहीं मैं राम ।
कर्ता भोक्ता जीव है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

मैं मेरा यह बन्धन राम ।
मैं–मेरा त्याग से मुक्ति राम ।।
बन्ध मोक्ष से दूर है राम ।
बन्ध मोक्ष जीव के राम ।।

दूर पास नहीं अखण्ड राम ।
आदि अन्त रहित है राम ।।
सूक्ष्म से सूक्ष्म है वह राम ।
महान से भी महान तुम हो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

कर्ता बन्धन में पड़ते राम ।
अकर्ता मुक्ति को पाते राम ।।
कर्ता बन क्यों बन्धते राम ।
अकर्ता हो मुक्ति पावो राम ।।
जो मानत मैं कर्ता राम ।
जन्म–मरण वह फंसता राम ।।
जो जानत मैं साक्षी राम ।
जीवन्मुक्त उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मै हूँ राम ।।

ज्ञान बिना नहीं मुक्ति राम ।
ज्ञानादेव तू कैवल्य राम ।।

चित्त शुद्धि हेतु कर्म है राम ।
ब्रह्म जिज्ञासा का साधन राम ।।

दृष्टि ज्ञान मय बनाओ राम ।
फिर जग देखो राम ही राम ।।

परम ब्रह्म दृष्टि ज्ञान है राम ।
ऐसे तुम हो आत्मा राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

जो दिखता है नहीं वह राम ।
देखन वाला वही एक राम ।।

आँख व रूप नहीं है राम ।
आखं रूप के प्रकाशक राम ।।

मन बुद्धि नहीं है वह राम ।
मन बुद्धि के ज्ञाता है राम ।।

जिसे जानत हो नहीं वह राम ।
सब को जानत वह तुम राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

कर्ण व शब्द नहीं वह राम ।
कर्ण शब्द के प्रकाशक राम ।।

वाक् वचन नहीं वह राम ।
वाणी वचन प्रकाशक है राम ।।
प्राण अपान नहीं वह राम ।
प्राणापान के प्रेरक राम ।।

संकल्प कर्त्ता मन है राम ।
मन को जो जानत वह तुम राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

देह मन्दिर सम जानो राम ।
देह को मैं नहीं मानो राम ।।

जड़ देह में चेतन जीव राम ।
जीव को शिव जानो राम ।।

देह विनाशी यह जानो राम ।
अविनाशी आतम है राम ।।

देह भाव को त्यागो राम ।
सोऽहम् भाव में जागो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

प्रवचनों में नहीं मिलते राम ।
ग्रन्थों में नहीं दिखते राम ।।

अनित्य कर्म से नहीं मिलते राम ।
शिखा सूत्र में नहीं है राम ।।

धन पुत्र से नहीं मिलते राम ।
बहु श्रवणीय नहीं जानत राम ।।

ध्यान समाधि नहीं मिलते राम ।
आत्मज्ञान से ही मिलते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

जो भूमा वह अमृत राम ।
अल्प को मृत्यु जानो राम ।।

मैं देह जो मानत राम ।
जन्म–मरण वे पावत राम ।।

जीव को ब्रह्म जो मानत राम ।
जीवन्मुक्ति वे पावत राम ।।
अहं ब्रह्म जो जानत राम ।
ब्रह्म वित ब्रह्म रूप है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

जिससे जग उत्पन्न है राम ।
जिससे जीवन मिलत है राम ।।
जिसमें सब लय पाते राम ।
उसी को ब्रह्म जानो राम ।।
एक देव सब देहो में राम ।
सर्वव्यापि घट घट में है राम ।।
त्रिपुटी के शक्तिदाता राम ।
साक्षी चेतन असंग है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

देव दुर्लभ तन मनुष्य है राम ।
मानुष मुक्ति धाम है राम ।।

उठो गुरु शरण जाओ राम ।
क्षण भंगुर देह जानो राम ।।

ज्ञान समान नहीं उत्तम राम ।
नर पशु है ज्ञान बिन राम ।।

ब्रह्म जिज्ञासा जब होती राम ।
गुरु शरण वह जाता राम ।।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

देह वृक्ष पर दो पक्षी है राम ।
एक देखत एक खावत राम ।।

जो देखत वह ब्रह्म है राम ।
कर्ता भोक्ता जीव है राम ।।

मिश्री को रस घन जानो राम ।
मिष्ठान्न रस मय मानो राम ।।

रसो वै सः आनन्दघन राम ।
विषयों से सुखी मनवा राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

आगे पीछे ब्रह्म ही राम ।
ऊपर नीचे ब्रह्म ही राम ।।

भीतर बाहर ब्रह्म ही राम ।
उत्तर दक्षीण ब्रह्म ही राम ।।

ज्ञान ज्ञेयं ज्ञान गम्य राम ।
हृदय सर्वस्य विराजत राम ।।

भेद द्रष्टा भय पावत राम ।
जन्म–मरण वह जावत राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

सोऽहम् पृथ्वी जानो राम ।
सोऽहम् आपः जानो राम ।।

सोऽहम् तेज को जानो राम ।
सोऽहम् वायु जानो राम ।।

सोऽहम् नभ को जानो राम ।
सोऽहम् रूप सब जानो राम ।।

अस्ति भाति प्रिय सोऽहम् राम ।
सामान्य चेतन है वह राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

यह मेरा कहना बन्धन राम ।
यह मेरी नहीं मुक्ति है राम ।।

ब्रह्म नहीं जो जानत राम ।
मुक्ति नहीं हो उसको राम ।।

निज को देह जानते राम ।
लख चौरासी भटकत राम ।।

आत्म भाव जो रखते राम ।
योग यज्ञ बिनु मुक्त है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

जीव को शिव रूप जानो राम ।
शिव ही देह में जीव है राम ।।

घटनाश से नभनाश नहीं राम ।
देहनाश साक्षीनाश नहीं है राम ।।

अज्ञान से जीव बन्धन राम ।
आत्म ज्ञान से मुक्त है राम ।।
जीव ब्रह्म है ज्ञान है राम ।
भेद मानना अज्ञान है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

अज्ञान से द्वैत भासता राम ।
अद्वैत ज्ञान में एक है राम ।।
देह पुरी नव द्वार है राम ।
इसी पुरी में रहते हैं राम ।।
धाम पुरी नहीं खोजो राम ।
यहाँ वहाँ वह एक है राम ।।
साधन से नहीं मिलते राम ।
स्वयं सिद्ध है आत्मा राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

तीन अवस्था जो जानत राम ।
उसीको ब्रह्म जानो राम ।।

तीन अवस्था परिच्छिन्न राम ।
चतुर्थ साक्षी तुम ब्रह्म राम ।।

तीन शरीर असत्य है राम ।
सर्व साक्षी एक सत्य है राम ।।

माया कृत तीन गुण है राम ।
गुणातीत आत्मा जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

आन देव जो पूजत राम ।
देव पशु सम जानो राम ।।

जो जानत मैं ब्रह्म हूँ राम ।
ब्रह्म स्वरूप हो जाता राम ।।
भूतादि उसे नहीं छूते राम ।
सबकी आत्मा हो जाता राम ।।
द्रष्टा दृश्य नहीं होता राम ।
ऐसा वेद बताता राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

उठो गुरु शरण जाओ राम ।
सोने का समय नहीं है राम ।।
आत्म तत्त्व दुर्लभ जग में राम ।
सबको सुलभ नहीं होता राम ।।
आत्म वेत्ता जग दुर्लभ राम ।
सुनकर समझना दुर्लभ राम ।।

आत्मनिष्ठ सहज नहीं राम ।
कोउ कोटि मध्य एक है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

जो कहता मैं जानता राम ।
मूर्ख उसे तुम जानो राम ।।
जो कहता मैं नहीं जानता राम ।
आत्मवित उसे ही जानो राम ।।

दृश्यवत नहीं वह दिखता है राम ।
द्रष्टा रूप वह स्वयं है राम ।।
ज्ञेय रूप वह नहीं है राम ।
ज्ञाता ज्ञेय प्रकाशक राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

अगुंष्ठ मात्र अन्तरात्मा राम ।
सदा सब जीवों में रहते राम ।।

जब दिव्य दृष्टि गुरु देता राम ।
सर्वत्र मैं रूप दिखता है राम ।।

नित्यों के भी नित्य है राम ।
चेतन के भी चेतन राम ।।

ज्योतियों के ज्योति राम ।
सब ह्दयों में रहते है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

सर्वत्र हाथ पैर है राम ।
सर्वत्र आँख कान है राम ।।

सर्वत्र मुख सिर है राम ।
इसी से अखण्ड कहावत राम ।।

सब हाथों से करते है राम ।
सब पैरों से चलते हैं राम ।।
सब आँखों से देखते राम ।
सब जीवों के एक आत्मा राम ।।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।
देह अशुद्ध है सर्वदा राम ।
आत्मा नित्य शुद्ध है राम ।।
देह शुद्ध नहीं किसी का राम ।
आत्मा अशुद्ध नहीं किसकी राम ।।
एक देव सर्व देहो में राम ।
सर्वव्यापी अन्तरयामी राम ।।
मृग कस्तुरीवत खोजत राम ।
नर पशु सम उसे जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

आन देव जो भजते राम ।
मद मांस बलि देते राम ।।

जो जन उस घर खाते राम ।
निश्चय नरक वे जाते राम ।।

सौ वर्ष गुरु भक्ति करके राम ।
एक दिन पूजत आनको राम ।।

महा अपराधी जीव वह राम ।
लख चौरासी वह फिरता राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

पत्थर का मन्दिर है राम ।
पत्थर का ही देव है राम ।।

पूजन वाला अन्ध है राम ।
जड़ पूजा नहीं भक्ति राम ।।

चेतन पूजा भक्ति है राम ।
पत्थर देव नहीं बोलत राम ।।

पत्थर देव नहीं खावत राम ।
चेतन आत्मा को जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

मूर्ति पूजा से नहीं मुक्ति राम ।
पूजक फिर फिर जन्मते राम ।।

ज्ञान नौका सुदृढ है राम ।
कर्णधार है सद्गुरु राम ।।

गुरू शरण जो जाते है राम ।
श्रवण मात्र से मुक्त है राम ।।

ध्यान योग नहीं सहज है राम ।
श्रद्धावान मुक्त हो जाते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

हृदय मन्दिर में चेतन राम ।
चेतन छोड़ जड़ जो पूजत राम ।।

ब्रह्म हत्या उन्हें लगती राम ।
जो पूजत आन देव को राम ।।

महामूर्ख उन्हें जानो राम ।
फिर फिर मृत्यु पाते है राम ।।

परमात्मा स्वरूप जीव है राम ।
उसे मार नहीं खाओ राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

देह अभिमान जो करते राम ।
आत्म हत्यारे उन्हें जानो राम ।।

किसी को शत्रु जो मानते राम ।
ब्रह्म हत्यारे उन्हें जानो राम ।।

बन्धन रूप दोउ हत्या राम ।
महापापी उन्हें समझो राम ।।

युग युग नरक वे सड़ते राम ।
ब्रह्म ज्ञान मुक्त कर देता राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

शिखा सूत्र जिनके ज्ञान है राम ।
ब्राह्मण उन्हीं को जानो राम ।।

ज्ञान सूत्र नहीं जिसको राम ।
नाम मात्र वह ब्राह्मण राम ।।

पुरोहित कर्म वे करते राम ।
पेट भरने वे जीते हैं राम ।।
द्वार द्वार वे मांगते राम ।
जन्म मरण वे भटकते राम ।।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

चारो धाम जो खोजत राम ।
सद्गुरु उन्हें नहीं मिला राम ।।
मन्दिर देव नहीं बोलता राम ।
देह मन्दिर में बोलता राम ।।
गंगा नहाने से नहीं मुक्ति राम ।
गंगा की मछली कहाँ मुक्त है राम ।।
आत्म तीर्थ में नहावो राम ।
जीवन मुक्ति को पाओ राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

वस्तु स्वभाव नित्य है राम ।
अग्नि उष्ण, बर्फ शीतल राम ।।

चीनी मधुर नीम कड़वा राम ।
सहज स्वभाव में नहीं साधन राम ।।

अग्नि प्रकट करना साधन राम ।
अग्नि उष्णता सहज सिद्ध राम ।।

आत्म भाव जाग्रत में साधन राम ।
आत्म ब्रह्म बिन साधन राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

अग्नि को उष्ण नहीं करना राम ।
अग्नि स्वभाव से उष्ण है राम ।।

आत्मा को मुक्त नहीं करना राम ।
आत्मा स्वभाव से मुक्त है राम ।।
चीनी को नहीं मधुर बनाना राम ।
चीनी स्वभाव से मधुर है राम ।।
आत्मा को ब्रह्म नहीं होना राम ।
आत्मा स्वयं ही ब्रह्म है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

धान देहाभिमान प्रतीक है राम ।
चावल देहाभिमान रहित है राम ।।
धान फिर फिर जन्मता राम ।
चावल फिर नहीं जन्मता राम ।।
अज्ञानी देह भाव युक्त है राम ।
ज्ञानी देहाभिमान से मुक्त है राम ।।

अज्ञानी धान सम जानो राम ।
ज्ञानी चावल सम जानो राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

अज्ञान द्वैत सा होता राम ।
वही अन्य अन्य को देखत राम ।।

अन्य अन्य को सुनता राम ।
अन्य अन्य को कहता राम ।।

अन्य अन्य को छूता राम ।
अन्य अन्य को सूँघता राम ।।

अन्य अन्य का रसलेता राम ।
अन्य अन्य को जानता राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

ज्ञान में द्वैत नहीं है राम ।
अब कौन किसको देखेगा राम ।।

अब कौन किसको सुनेगा राम ।
अब कौन किसको छूवेगा राम ।।

अब कौन किसको सूँघेगा राम ।
अब कौन किसको चखेगा राम ।।

जिससे सब जग जानत राम ।
उसको किससे जाने राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

आत्म तत्त्व सुनने को दुर्लभ राम ।
सुनकर समझना दुर्लभ राम ।।

प्रवक्ता मिलना भी दुर्लभ राम ।
सुनने वाले सब नहीं होते राम ।।

आत्मज्ञ को भी दुर्लभ जानो राम ।
कोई एक आत्मवित होता राम ।।

बहु जन्मों के पुण्य जब होते राम ।
अन्तिम जन्म में पाजाते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

एक अचम्भा देखा हे राम ।
पति नहीं पत्नी को चाहता राम ।।

पत्नी भी नहीं पति को चाहती राम ।
पिता नहीं पुत्र को चाहता राम ।।

पुत्र भी नहीं पिता को चाहता राम ।
शिष्य नहीं गुरु को चाहता राम ।।

भक्त नहीं भगवान को चाहता राम ।
अपना ही सुख सब चाहते राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

अमृत को जो पी चुके राम ।
उन्हें दुग्ध प्रयोजन नहीं राम ।।

ज्ञानाग्नि से जो शुद्ध है राम ।
अग्नि संस्कार किं प्रयोजन राम ।।

नदी पार जब कर गये राम ।
तटस्थ को अब नहीं नौका राम ।।

सूर्य बिना तम नहीं जाता राम ।
ज्ञान बिना नहीं मुक्ति है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी सोऽहं राम ।।

आदि मध्य अन्त एक है राम ।
जड़ चेतन नहीं है दो राम ।।

जीव को ब्रह्म तुम जानो राम ।
ऐसा कृष्ण बताते है राम ।।

अणु अणु में व्यापक एक राम ।
कारण कार्य अभिन्न है राम ।।

नाना जीव जो दिखते राम ।
अधिष्ठान ब्रह्म एक है राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

अमृत तृप्त मृत्यु नहीं राम ।
ज्ञान से दग्ध नहीं अग्नि राम ।।

नदी पार नहीं नौका राम ।
सूर्योदय पर नहीं दीपक राम ।।

ब्रह्म जिज्ञासा नहीं कर्म राम ।
आत्मनिष्ठ को नहीं साधन राम ।।

सर्वव्यापि जब जाना राम ।
तीर्थ यात्रा नहीं प्रयोजन राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी आत्मा राम ।।

अनुभव में नहीं आते राम ।
अनुभव कर्ता स्वयं हे राम ।।

दृश्य रूप नहीं दो है राम ।
द्रष्टा रूप वह एक है राम ।।

ज्ञेय रूप नहीं वह राम ।
ज्ञाता ज्ञान से पार राम ।।

प्रमेय रूप नहीं है राम ।
प्रमाता प्रमाण के साक्षी राम ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी मैं हूँ राम ।।

गुरु बिन ज्ञान कबहु न पाई ।
ज्ञान बिना भ्रम कहु न जाई ।।

मन कामना सिद्धी नर पावा ।
जो यह सत्य कपट तजी गावा ।।

जे कहहि सुनहि अनुमोदन करहि ।
गो पद इव भव निधि तरहि ।।

मति अनुरूप सत्य में भाखि ।
यद्यपि प्रथम गुप्त करी राखि ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
द्रष्टा साक्षी हम है राम ।।

कहिअन श्रद्धा भगति बिन सठहि ।
मन से न सुनत दम्भी जो हठ ही ।।
कहिअन लोभि ही कामी हि क्रोधि हि ।
जो न भजन सचराचर स्वामी ही ।।

द्विज द्रोही को न सुनावहु कबहुं ।
सुरपती समान होई नृप जबहू ।।

राम कथा के तेइ अधिकारी ।
जिनके सतसंगती अतिप्यारी ।।

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

अधिक जानकारी तथा ग्रन्थ प्राप्ति के लिये सम्पर्क करें :
प्लट नं : **58/60**, दिव्य विहार, सामन्तरायपुर, भुवनेश्वर-2 (उड़िशा)
फोन नं : **(0674) 2340136, 9437006566**
Visit us at : www.niranjanmission.org